International Journal of Enhanced Research in Management & Computer Applications, ISSN: 2319-7471
Vol. 3 Issue 2, February-2014, pp: (43-47), Impact Factor: 1.147, Available online at: www.erpublications.com

आधुनिक भारतीय कला में काली का रूपांकन

Rajesh Kumar Sharma

Assistant Professor, Department of Sculpture, College of Art, Chandigarh

आधुनिक भारतीय कला इतिहास की बीसवीं सदी में भारत में आधुनिक व लोकप्रिय कला के साम्राज्य में मूलभूत परिवर्तन किए हैं। समय के दौरान प्राचीन परम्परा की घोषणा तथा अनुवाद को घनिष्ट रूप में वर्तमान स्थिति तथा कलात्मक बाद विवाद ने एक दूसरे के ऊपर अपना अधिपत्य जमा लिया तथा स्त्रो की आकृति, वेशभूषा आलौकिक या नश्वर, परम्परागत को आधुनिकता के विरूद्ध तथा भारतीयों को पश्चिमी सभ्यता के विरूद्ध प्रतियोगिता को प्राथमिक स्थान पर रखती रही है। भारतीय कला के अध्ययन तथा उचित मूल्यांकन का कार्य 20वीं शताब्दी के आरंभ में कला विशेषज्ञों, पुरातत्त्वशास्त्रियों, कला आलोचकों व विद्वानों द्वारा हुआ।
क्योंकि बीसवीं शताब्दी से पहले यहां की चाक्षुष कलाएं अन्य बातों के अलावा धार्मिक, साहित्यिक ऐतिहासिक या फिर 'नेरेटिव' संदेश देने का एक माध्यम थीं इसके विपरीत वर्तमान शताब्दी में कलाओं ने अपनी पहचान, स्वायत्त प्रकृति व विशिष्ट सौंदर्यात्मक प्रयोजनों से, निर्धारित की है। शक्ति व देवी के रूपों को चित्रकारों एवं मूर्तिकारों ने अपने भावों और विचारों से विभिन्न तरीके से चित्रित करने का प्रयास किया जिसका विस्तार पूर्वक वर्णन आगे देना चाहुंगा।

अवनिद्रनाथ टैगोर

आप भारतीय लघुचित्र परंपरा से प्रभावित थे आपके अधिकांश सृजन में अघ्यन चित्र तैल व जलरंग पेन्टिंग का मिश्रण हुआ है। श्री अवनिन्द्र नाथ टैगोर की ''भारत माता'' का राष्ट्रमाता मानकर एक शांत भगवा पहने हुए सन्यासी महिला के रूप में दिखाया गया है।

राजा रवि वर्मा (1848 – 1906)

उन्नीसवीं शताब्दी से सर्वाधिक चर्चित कलाकार राजा रवि वर्मा (1848–1906) ही कहे जा सकते हैं, जिन्होंने ब्रिटिश अकादमिक शैली के अनुरूप बहुत बड़ी–बड़ी संख्या में पेंटिंग, डाइंग, जलरंग चित्र और ओलियोग्रॉफ बनाए थे। आदर्श सौंदय के मानक स्वयं निर्धारित किए थे और काव्यात्मक उत्साह के साथ उनका चित्रकन किया था।

उनकी कला में ऐसे उच्च नैतिक संदेश मिलते हैं, जो भारतीय जीवन के हर पक्ष के संदर्भ में राष्टोय अस्मिता की तलाश के अनुकूल ठहरते हैं। **श्री रवि वर्मा** ने अपने चित्रों के द्वारा दर्शकों की कल्पनाशक्ति को लुभाने की कोशिश की।
उनके द्वारा रचित एक चित्र में शिव अधनारीश्वर के रूप में दिखाई देते हैं। एक अन्य में गंगावतरण, इस चित्र में शिव गंगा को पृथ्वी पर लाने के लिए अपनी जटाओं को खोले हुए एक शिला पर खड़े हैं वहीं पास में एक साधु हाथ जोड़े खड़ा है तथा बैल के सहारे एक स्त्री खड़ी हुई है। सभी ऊपर आसमान से आती हुई गंगा की ओर देख रहे हैं। उन्होंने परिचित चेहरों का, महाकाव्यों के दैवी और पौराणिक चरित्रों के लिए, अपनी शबीहों में इस्तेमाल किया और इनकी समानता को न केवल स्वीकार किया गया बल्कि इन्हें लोगों ने पूजा के योग्य तक माना।

रवींद्रनाथ टैगोर (1861 – 1941)

महाकवि **रवींद्रनाथ टैगोर** की सृजनात्मक प्रतिभा, 19वीं सदी के लगभग अंत तक, मुख्यतः साहित्य, संगीत और नाटक के माध्यम से प्रवाहित होती रही, उन्होंने 1893 से चित्राकन शुरू कर दिया था।

उनकी रंग–योजना कोई गूढ़ रहस्य छिपाए गहरी सुसंगति लिए होती है जिसमें से अक्सर आकृतिया हल्की बाह्य रेखाओं के साथ बाहर आती लगती हैं। उनकी लाल, भूरी, पीली रंगतें अभिव्यंजक ऊर्जा से ओतप्रोत हैं और अक्सर काली पृष्ठभूमि के विरोधा में उभरती दिखाई देती हैं जैसेकि भारतमाता तथा सुजाता है।

एम.एफ. हुसैन (1915–2011)

श्री एम. एफ. हुसैन उन विश्व प्रसिद्ध कलाकारों में से एक हैं जो बड़े असाधारण तरीके से महत्वपूर्ण घटनाओं को अपने सौंदर्यशास्त्रीय विचारों के साथ प्रस्तुत कर देते हैं और कभी–कभी तो अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए रंगों तथा रूपाकारों में उग्र विरूपण तक का प्रयोग कर लेते है।

उनके सुप्रसिद्ध चित्र–श्रृंखलाओं की व्याख्या में–रामायण व महाभारत (हिंसा, अन्याय तथा विषाद का चाक्षुप रूपक), मदर टेरेसा ;प्रेम तथा आशा का प्रतीक), गज गामनी इमेंज़ ऑफ द ब्रिटिश राज (तत्कालीन जीवन तथा व्यक्तियों पर चुटीलो व्यंग्य – और देवी के कई चित्रों का चित्रण किया। एक चित्र में सरस्वती जो वीणा बजा रही हैं पास ही मोर तल्लीनता से देख रहा है। कुछ लोग उसके आगे हाथ जोड़ के खड़े हैं रात का समय है पीछे चाद नज़र आ रहा है सरस्वती के सिर के पीछे एक चेहरा नज़र आ रहा है या फिर उनकी परछाई ही नज़र आ रही है।

एक अन्य उदाहरण में चालीस के दशक से ही श्री हुसैन जी ने यथार्थ तथा अमूर्तन को बड़े आकर्षक तरीके से एक साथ मिला देने का प्रयास किया है। उनके चित्र में काली अपने विराट रूप में धनुष बाण उठाए हुए है शेर भी गुस्से में दिखाई दे रहा है पीले, नीले, नारंगी, काले और सफेद रंगो का समावेश है।

श्री हुसैन जी की कला उन सभी आधनिक रूपी कलाओं के परिवर्तनो के चित्रों का प्रतिनिधित्व करती है, जो पिछले पचास वर्षो में भारत की पारम्परिक कलाओं में घटित करती ह – यथार्थवादी चित्रांकन से लेकर उन्नीसवीं शताब्दी की ब्रिटिश अकादमिक परम्परा से प्रभावित शैली के अन्तर्गत तथा चित्रों के मामले में आधनिक युग के विरूपण को अपनाने तक। इन दोनों के मिश्रित प्रभाव कहे जा सकते हैं।

तैयब मेहता (जन्म सन् 1925)

श्री तैयब मेहता जी अपने चित्रों का चित्रण इस तरह नहीं करते कि वह एकमात्रा धारणा पर केन्द्रीत हो, बल्कि वह इसे रेखाओं तथा रूपाकार के चित्राकाशीय दृष्टिक्रम के अनुरूप प्रस्तुत करते हैं। उनके चित्रों में त्रिमिति का भ्रम वस्तुतः धरातलों के स्थान को परिवर्तित करने से उत्पन्न होता है जैसाकि उनके चित्रों में काली चरक दुर्गा, संथालों का वसंत उत्सव तथा अन्ये अनेक उनके चित्रों से स्पष्ट है। धरातल तथा रूपाकार, हल्के और गहरे रंगों या रंगमय स्पेस के स्वेच्छाचारी निर्धारण से, उजागर होते हैं आर इस प्रभाव को लाने के लिए वह कभी–कभी 'ऐज शेडिंग' तकनीक का भी प्रयोग करते हैं जैसेकि उनक चित्र काली के विलक्षण बिंब गहरे नीले रंग में हैं– अपने शक्तिवान, निगल जाने वाले लाल मुख के साथ सभी कुछ का समावेश कर लेने वाली देवी की भयानक उपस्थिति करती ह।

जी. आर. संतोष (सन् 1929–1997)

श्री जी. आर. संतोष जी को ज्यादातर पेंटिंग्स में ज्यामितिक आकृतियों का तांत्रिक परंपरा से नजदीकी सम्बन्ध है। ज्यामितिक रूपाकार तो प्राकृतिक नियमों तथा ऊर्जा के आलेख हैं, जो अनुभवगम्य तथा परा–अनुभव स्तर के हैं।

श्री जी. आर. संतोष की कला सृजनात्मकता दृष्टिकोण के अनुरूप है। उनकी कलात्मक गतिविधि तथा आध्यात्मिक खोज, भारतीय परंपरा के इसी आधार के अनुसार, एक दूसरे में विलीन हो जाती है– यहा आध्यात्मिक आनंद सौंदर्यात्मक आनंद का पर्याय है और ये दोनों ही अन्मयता व चिंतन से प्राप्त होते हैं।

उनके काम में पंच तत्वों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और स्व) के व्यक्त स्वरूप की अत्यंत सृजनात्मक चित्रभाषा में सौंदर्यशास्त्रीय प्रशस्ति मिलती है, जबकि उनकी पहले की पेंटिंग्स में 'दिवय' का ऐसा स्वरूप प्रकट हुआ है, जो ज्यामितिक आकृतियों की प्रतीकात्मक सन्निधि से अभिन्न है, और इनमें वह स्व को केंद्रीय अभिप्राय के रूप में अंकित करते हैं। उनके चित्रों में तान्त्रिक विषयों की पहचान की सूचक है।

शक्ति बर्मन (जन्म सन् 1935)

शक्ति की लगभग सभी चित्रों में स्वप्न का प्रभामण्डल होता है जो कल्पना से उगता है आर वास्तविकता से दूर कर दिया जाता है। स्वपनों के बारे में उसकी जागरूकता, जो प्राचीन भारतीय कहानियों में चर्चित है उनके चित्र (ड्रीम ऑफ माया) माया का स्वपन' में स्पष्ट दिखाई दे रहा है। **बर्मन** जी की कला में देवी का चित्र है जिसमें उनकी दस भुजाएँ अस्त्रा–शस्त्रा लिए हुए हैं पास ही कार्तिकेय मोर के पास शान्त मुद्रा में है। पुरूष एवं स्त्रियाँ अपने में तल्लीन कुछ कर रही हैं या सोच रही हैं। वहीं नीचे शेर असुर पर हमला कर रहा है पासमें गणेश नृत्य कर रहे हैं एवं शिव अपने वाहन बैल पर शान्त मुद्रा में बैठे हैं।

एक और चित्र में एक देवी है जिसकी छः भुजाएँ है। वह अपने हाथों म आइना पकड़े हुए है जिसमें स्त्रो एवं पुरूष के चित्र नज़र आते हैं पास ही विदेशी वेशभूषा में एक स्त्री नृत्य कर रही है वही दूसरा व्यक्ति हिन्दु रीति रिवाजों की तरह धोती पहने कंध पर पटका डाले हुए एक ऐसे जानवर पर बैठा है जिसका सिर आदमी का किन्तु सिर पर दो सींग और धड़ जानवर का है। अन्य सभी मिली जुली वेशभूषा में नजर आ रही है।

विकास भट्टाचार्य (21 जून 1940 – 18 दिसम्बर 2006)

विकास भट्टाचार्य पश्चिम बंगाल के कोलकाता के एक भारतीय चित्रकार थे। **विकास भट्टाचार्य** के यथार्थवाद को भारतीय कला में वापस लाने का श्रेय दिया जाता है जब भारत में कलाकार आंकड़ो के निरूपण और अमूर्तता के प्रति झुकाव कर रहे थे। **भट्टाचार्य** एक पूर्ण चित्रकार थे उनके तेल चित्रों में एक महिला की चिलमची या त्वचा की टोन की सटीक गुणवत्ता को दर्शाया जा सकता था उन्होने प्रकाश की गुणवत्ता पर कब्जा करने में माहिर हासिल किया। **भट्टाचार्य** जी ने अपने चित्रों में एक आदर्श गुण प्राप्त किया जो दृश्यों से अवचेतन तक कई स्तरों पर काम किया है। विषय में महिला प्रपत्रा के चित्रण और सभी उम्र एवं परिस्थियों के गुण शामिल हैं। – बूढ़ें पुरूष और महिलाऐं, बच्चे, घरेलू सहायक।

मंजीत बावा (जन्म–सन् 1941)

इनकी कला पहाड़ी लोककला की परम्परा से प्रेरित है। उनकी 'बिना हड्डी वाली आकृतियों'' में चाहे वे व्यक्ति हों या पशु इनकी कला मुद्राओं तथा भंगिमाओ को अभिव्यक्त करती है। मानव तथा पशुओं की कोमलता से गढ़ी अकृति में भाव पूर्ण मुद्राए हैं।

माधवी पारेख

गुजरात के एक गाँव संजय में जन्मी, माधवी पारेख अपने शैलीगत लोक कला में अपने ग्रामीण प्रभाव को दर्शाती है। उनकी थीम हमेशा उन छवियों के आस पास घूमती हैं जो उन्हें प्रभावित करती हैं। उनकी रचनाऐं लचीली होती हैं, उनके सभी चित्रों में डिजाईन की एक मजबूत समझ होती है। माधवी के काम में भारत की प्रेरणा हैं जबकि उसकी शैली समकालीन हैं उन्होने माँ काली के संहार करते हुए कई रूपों को दर्शाया हैं।

श्रीमती गोगी सरोज पाल (जन्म सन् 1945)

श्रीमती गोगी सरोज पाल सन् 1968 ई. में दिल्ली आई थीं और 'फ्रीलांस' चित्रकार की तरह काम किया। वह कला के क्षेत्र में भारत की पहली ऐसी महिला चित्रकार हैं।

उनकी पेंटिंग्स उनके अपने तथा समाज के व्यवहार के प्रभावों के चारों ओर चिंतन करती लगती हैं। वह अपने अभिनेताओं का स्वयं निर्माण करती हैं, जो उनकी पेंटिंग्स में प्रदर्शन करत हैं.... कभी–कभी ये जीवन का संचार करते दुनिया के सुखों व दुखों में सामन्जस्य पैदा करती लगती हैं..... कभी–कभी वह ऐसे चाक्षुष प्रतीकात्मकता व रूपाकार प्रदान कर देती हैं, जो अनुष्ठानों, मिथकों धर्म से संबंधित उनके अपने सृजनात्मक अनुभव का भंडार हैं। उनको अभिव्यक्ति उनके अपने ही अनुभवों पर आधारित है। यह चित्र काली का है जिसमें वह महिषासुर के बाल पकड़े हुए दौड़ती हुई नज़र आ रही हैं देवी का यह चित्र चटक नीले रंग का है बाल हवा में उड़ रहे हैं। महिषासुर का आध शरीर में भैंसे की परछांई दिखाई दे रही है।

उन्होने सृजनात्मक मानस को ऐसा झकझोरा कि इनके लिए उन्होंने चाक्षुष बिंबों का सृजन कर डालां इनका एक चित्र है, जिसका नाम देवी हैजिसमे वह एक शेर पर बैठी है उस चित्र में चटकीले रंग जैसे नारंगी हल्का लाल है। इस चित्र में देवी का आधा शरीर शेर का है उपर का हिस्सा स्त्री का बाल खुले हुए हैं इसमें पीला, नारंगी, लाल एवं काले रंगो का प्रयोग किया गया है।

जय झरोटिया (जन्म सन् 1945)

श्री जय झरोटिया ऐसे प्रतीकों के माध्यम से स्वयं को अभिव्यक्त करते हैं, जो उनकी आंतरिक भावनाओं से मेल खाते हैं, वह ऐसे प्रतीकों क सृजन की कोशिश नहीं करते, जो उनके संवेदन के वस्तुपरक सहसंबंध पर निर्भर करते हैं और न ही वह सामान्य चित्रभाषा या खोज के अनुसार अपनी भावनाओं को समायोजित करते हैं।
उनके एक चित्र में एक स्त्री का बड़ा सा चित्र है वह हाथ में एक मोमबत्ती पकड़े हुए है मोमबत्ती के प्रकाशा से एक और स्त्री का चेहरा नज़र आ रहा है जो सिर को ढ़के हुए है सामने एक नाव रखी है।
श्री जय झरोटिया जी की कला कृतियों के चित्रभाषा में अभिव्यक्ति करते हैं और साथ ही अपने काम के माध्यम से वह दूसरों को अपनी दिशा में ले जाने में भी सक्षम हैं। ये कहा जा सकता है कि उनके लिए विषय उतना महत्वपूर्ण नहीं हैं, जितना रेखांकन तथा चित्रांकन के माध्यम से विषय में अमूर्तन को पकड़ना है। इनका अर्थ भी तब खुलता है, जब कोई इन्हें शांति तथा ध्यान स देखता है।

उनकी महत्वपूर्ण कलाकृतिया, जैसेकि बुल एंड दि वुमन राइडर, एक्रोबेट्स, दि वर्ल्ड ऑफ दि क्लाउन, एक्सटेंशन ऑफ डिज़ायर, द गेम ऑफ लव, स्पेस मिराज़ और मिस्टो एंड प्रकृति, उनके वैयक्तिक जीवन की झलक देता है। जिन कृतियों से उनकी अंतर्दृष्टि उजागर होतो है, उनमें आश्चर्यजनक बिंब, विनोदी प(तिया तथा गंभीर क्लासिकल विषयों का कुछ–कुछ शरारती विश्लेषण देखने को मिलता है। इस चित्र में एक सोफा है उसमें एक तरफ एक कटोरा है और एक खुली किताब है सोफे की पीठ पर दो औरतों के चित्र हैं उसके सामने ही एक बिल्ली की तरह ही जानवर है किन्तु उसका मुख औरत का है कभी यह भी लगता है कि वह एक बैठी हुई औरत है। पीले और नारंगी रंगों के बीच हरा रंग उभर कर आया है।

संजय भट्टाचार्य (सन् 1958)

संजय भट्टाचाय ने सन् 1994 में सोलो प्रदर्शनी लगाई जिसका टाईटल था राजीव गाँधो इसका दृश्य चित्रण नेशनल गेलरी ऑफ मॉर्डन आर्ट दिल्ली में हैं। यह भारत के इकलौते पेन्टर हैं। जिन्होने अपनी तरूण अवस्था या कम उम्र में एन. जी. एम. ए. में सोलो प्रदर्शनी लगाई इनका जन्म 1958 में हुआ।इन्होने ब्रिटिश के पुराने खयालों से मिलती जुलतो वास्तविकता को दिखाते हुए पानी के रंगों से चित्रकारी की है। इनका यह चित्र मा शीतला का तैल चित्र है, मा अपने वाहन गध पर विराजमान हैं, बाल खुले हुए हैं और एक पैर ज़मीन पर है तथा दूसरा कुछ ऊँचाई पर है शरीर पर विभिन्न प्रकार की मालाए पड़ी हैं इनकी शली में कल्पनाशील उड़ान के साथ सामाजिक आलोचना के भावों की अभिव्यक्ति है।

अपर्णा कौर

अपर्णा कौर ने 1974 में भारत एवं विदेशों में सोलो प्रदर्शिनियां की। इनका काम भाग्य के ऊपर पैन्टिंग बनाना अपना भाग्य बुनना अथवा काटना आपके हाथ में हैं इन्होने कुण्डली और नक्षत्रों के ऊपर तैलीय कैनवास में चित्रित किया है।

आनन्द मोय बैनर्जी (सन् 1956)

कोलकत्ता में जन्में एक प्रख्यात प्रिंट मेकर हैं। उनका दृंढ विश्वास है कि हमारे चारों तरफ जो कुछ भी है अपनी छाप छोड़ देता है। इन्होनें तकनीकों से लेकर विषयों तक अपने कार्यों में कई प्रयोग किये हैं। वह भारत और विदेश में अपनी कलाकृतियाँ प्रदर्शित करते आये हैं और विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किये गये हैं उनके अनुसार पुरूष और प्रकृति हमेशा उनकी प्रेरणा का स्त्रोत रहे हैं कला के अपने काम के लिये वह कई तरह की सामग्री का उपयोग करते हैं और इसलिये वह एक पेन्सिल से लेकर डिजिटल ग्राफिक तक रंग चित्रण, प्रिंट करने और प्रयोगात्मक के लिये प्रयोग करते हैं।

सीमा कोहली

प्रसिद्ध कलाकार **सीमा कोहली** की अपनी शीशों पर नक्कासी की चित्रकला सुन्दर एवं अलौकिक नमूना है। इस विशेष चित्रकला में उसने देवी काली को एक भंयकर तथा निर्भय चेहरे व राक्षसो की सेना के रूप में चित्रित किया है एक दूसरी काँस्य

की आकृति जिसका शीर्षक महिषा मर्दिनी है वह देवी को विजयी मुद्रा में राक्षसों की जीत के बाद महिषासुर पर बैठी दिखाई गई है। सीमा कोहली ने चौसठ योगिनियों का भी विस्तार पूर्वक वर्णन किया है।

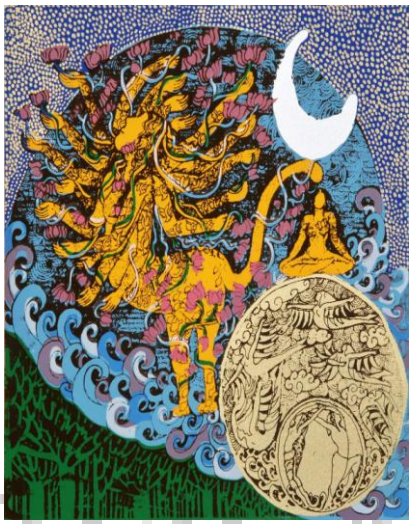

अजय झरोटिया (सन् 1968)

जो न केवल दिल्ली विश्वविद्यालय में एक प्रतिष्ठित चित्रकार हैं बल्कि एक प्रमाणित जैमिनी विद्वान और पेशेवर ज्योतिष का अभ्यास कर रहें हैं। आप एक प्रसिद्ध कलाकार और कला शिक्षक हैं। दादा दादी के साथ कलाकारों के एक परिवार की वंशावली में जन्में अपनी कुल देवी, देवी माँ कालिका के भावुक भक्त थे इसलिये कलात्मक प्रतिभा को प्राप्त करना और रचनात्मकता के प्रति एक अध्यात्मिक झुकाव उनमें स्वाभाविक रूप से आया इनका काम इनके विचारों की श्रृंख्ला है वह जो गहन हो गया इनकी बनायी हुई चित्रकारी में हमे महाकाली के कई स्वरूप का आभास होता है।

ग्रन्थसूची

[1]. Hussain Affair by Juneja in Economic and Political Weekly, on 25th January, 1997
[2]. A 2000 year old feat, by Lal and Dikshit, Pg no – 49-54
[3]. The Last Harvest, Paintings of Rabindranath Tagore, Pg no 12-18, by R.S.Kumar, 2011
[4]. World Hindu Council, Quoted in The Telegraph Newspaper, 5 October, 1996
[5]. Feminine Identity, in Article Women in Calendar Art Icons by Uberoi

इंटरनेट संदर्भ

[1]. http:/k/kwww.culturalindia.net/kindian-art/kpainters/kabanindranath-tagore.html
[2]. https:/k/kwww.thefamouspeople.com/kprofiles/kraja-ravi-varma-5407.php
[3]. http:/k/kwww.business-standard.com/karticle/kpti-stories/kartist-sakti-burman-knighted-with-top-french-award-116031100396_1.html
[4]. http:/k/kwww.livemint.com/kLeisure/kD0IhwFMqp1999LuN19NkkJ/kThe-feminist-artist.html
[5]. http:/k/kwww.icacart.com/kartist/kjai-zharotia